

Sl. 58, v. 2, b. दक्षिणं पाणिं सवाढं वा उद्धरेदि-
ति वहिष्कुर्यात् ॥ (*Coulloúca.*)

Sl. 59, v. 1, b. नापि परकीयक्षीरादि पिवन्तीं तस्य
कथयेत् ॥ (*Coulloúca.*)

Sl. 64, v. 1. अशास्त्रीयाणि नृत्यगीतवाद्यानि नाच-
रेत् ॥ (*Coulloúca.*) — v. 2, b. विरावयेत् *éd. Calc. éd.*
Lond. N° II, ms. dévan. ms. beng. — Les leçons fournies
par les autres mss. sont incorrectes. (Voyez les notes de
M. Haughton, p. 357.)

Sl. 65, v. 2, b. यत्र मनो विचिकित्सति तद्वावडुष्टं
न तत्र भुञ्जीत ॥ (*Coulloúca.*)

Sl. 68, v. 2, a. शोभनवर्षैर्मनोज्ञाकृतिभिः ॥ (*Coull.*)

Sl. 69, v. 2, a. न हिंद्यात् स्वयमिति शेषः ॥ (*Rāgh.*)

Sl. 70, v. 1. नाकारणं मृच्छोष्टं मृद्नीयात् ॥ (*Coulloúca.*)

Sl. 72, v. 1, b. केशकलापाद्वहिर्माल्यं न धारयेत् ॥
(*Coulloúca.*)

Sl. 77, v. 1. तरुगुल्मलतागहनवेनाचक्षुर्गीचरम-